Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4346–4350

COMPARATIVE STUDY OF ENVIRONMENTAL AWARENESS OF SECONDARY SCHOOL STUDENTS

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

Nitin Kumar [1], Rajkumari Singh [2]

[1] Researcher, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India
[2] Research Supervisor, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5070

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: It is very important to increase the environmental awareness of secondary school students. For this, there is a need to improve the education system, curriculum, teacher training, and school activities. Along with this, the cooperation of society and family is also important. Environmental awareness of students not only leads to their personal development, but also benefits the society and the country. Therefore, we should work together in this direction and ensure a safe and healthy environment for the coming generations. Findings from the research - No significant difference was found in the environmental awareness of students of secondary schools, no significant difference was found in the environmental awareness of urban and rural students of secondary schools.

Hindi: माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और स्कूल की गतिविधियों में सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही, समाज और परिवार का सहयोग भी महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता से न केवल उनका व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि समाज और देश को भी लाभ होता है। इसलिए, हमें इस दिशा में मिलकर प्रयास करना चाहिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित करना चाहिए। शोध से प्राप्त निष्कर्ष - माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Keywords: Secondary School, Student, Environmental Awareness, मांमाध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, पर्यावरण जागरुकता

1. प्रस्तावना

पर्यावरण जागरूकता आज के युग की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हमारे पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित रखना, भविष्य की पीढ़ियों के लिए आवश्यक है। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता को विकसित करना आवश्यक है क्योंकि वे समाज का भविष्य हैं।

पर्यावरण जागरूकता का अर्थ है पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को समझना और उनका पालन करना। यह केवल हमारे आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव विविधता की सुरक्षा, और पर्यावरणीय

समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता भी शामिल है। पर्यावरण जागरूकता हमें यह सिखाती है कि हम किस प्रकार अपने पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रख सकते हैं और उसके संरक्षण में योगदान कर सकते हैं।

1.1. माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता का स्तर

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि उनकी इस विषय में कितनी जानकारी और समझ है। अधिकांशतः विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में सतही जानकारी रखते हैं, लेकिन गहराई में जाने पर उनकी समझ सीमित होती है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि पर्यावरण शिक्षा का उचित ढंग से न होना, पाठ्यक्रम में पर्यावरण विषयों का कम समावेश, और शिक्षकों का इस विषय में अपर्याप्त प्रशिक्षण।

माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण से संबंधित विषयों को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। हालांकि विज्ञान और भूगोल जैसे विषयों में पर्यावरण से संबंधित पाठ होते हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं होते। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देने के लिए अतिरिक्त शिक्षण सामग्री और संसाधनों की आवश्यकता होती है।

माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। वृक्षारोपण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण दिवस का आयोजन और विभिन्न प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। इसके साथ ही, विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन में पर्यावरण संरक्षण के उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

शिक्षक विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को पर्यावरण शिक्षा के प्रति स्वयं जागरूक होना चाहिए और विद्यार्थियों को इस विषय में सही जानकारी प्रदान करनी चाहिए। वे कक्षाओं में पर्यावरणीय समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं, परियोजनाएँ और अनुसंधान कार्य दे सकते हैं और विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक उपाय सिखा सकते हैं।

1.2. पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के उपाय

पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने के लिए सबसे पहले शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक जानकारी ही नहीं बल्कि व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम में पर्यावरण से संबंधित विषयों का अधिक समावेश होना चाहिए। विद्यार्थियों को जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, वनीकरण और प्रदूषण नियंत्रण के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए। इसके अलावा, विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण भी आवश्यक है। उन्हें पर्यावरण शिक्षा के नवीनतम तरीकों और साधनों से परिचित कराया जाना चाहिए। इसके लिए विभिन्न कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन किया जा सकता है।

स्कूलों में नियमित रूप से पर्यावरणीय गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए। इनमें वृक्षारोपण, सफाई अभियान, पर्यावरणीय प्रतियोगिताएँ, और अन्य गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी का विकास होगा।

पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाने में समाज और परिवार की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाने के लिए उनके परिवार और समाज को भी जागरूक होना आवश्यक है। इसके लिए सामुदायिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।

1.3. विद्यार्थियों पर पर्यावरण जागरूकता के प्रभाव

पर्यावरण जागरूकता विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाती है। वे पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझते हैं और अपने दैनिक जीवन में इसका पालन करते हैं। इससे समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन आता है।

स्वस्थ पर्यावरण हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। पर्यावरण जागरूकता विद्यार्थियों को प्रदूषण और अन्य पर्यावरणीय समस्याओं से बचने के उपाय सिखाती है, जिससे उनका स्वास्थ्य बेहतर रहता है।

पर्यावरण जागरूकता से समाज और देश को भी आर्थिक लाभ होता है। पर्यावरण संरक्षण के उपायों को अपनाने से प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है, जिससे आर्थिक विकास में मदद मिलती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण जागरुकता आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हमारे आस-पास की दुनिया में तेजी से हो रहे पर्यावरणीय परिवर्तनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अगर हम अपनी धरती को बचाने के लिए तत्पर नहीं होंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा। इस दृष्टिकोण से, माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। आज हम विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जैसे जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण, जैव विविधता की हानि, और प्राकृतिक संसाधनों की कमी। ये समस्याएं न केवल हमारे वर्तमान जीवन को प्रभावित कर रही हैं, बल्कि आने वाले समय में भी इनका प्रभाव बहुत गंभीर हो सकता है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी, जो कि भविष्य के नागरिक, नेता और नीति निर्माता होंगे, को इन समस्याओं के प्रति जागरुक करना अति आवश्यक है।

माध्यमिक विद्यालय का समय वह अवधि होती है जब विद्यार्थियों का मानसिक और सामाजिक विकास होता है। इस समय में उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाने से वे आने वाले समय में जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। उन्हें यह सिखाना कि पर्यावरण का संरक्षण क्यों महत्वपूर्ण है और इसे कैसे किया जा सकता है, उनके व्यक्तित्व और सामाजिक दायित्व की भावना को मजबूत करता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पर्यावरणीय शिक्षा महत्वपूर्ण है। इन लक्ष्यों में से कई का सीधा संबंध पर्यावरण से है, जैसे स्वच्छ जल और स्वच्छता, जलवायु कार्रवाई, और जीवन की गुणवत्ता। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी यदि इन लक्ष्यों के महत्व को समझेंगे तो वे सतत विकास के लिए बेहतर कदम उठा सकते हैं।

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता के अध्ययन की आवश्यकता और महत्व न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि समग्र रूप से समाज और पर्यावरण की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करता है और सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम विद्यार्थियों को पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करें और उन्हें एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करें।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित निम्न शोधार्थियों राकेश कुमार एवं मनोज झाझडिया (2016), धनन्जय कुमार एवं शकीला अजीम (2022) एवं कर्मवीर (2022) ने शोध किये हैं।

4. समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन।

5. चरों का परिभाषीकरण

1) माध्यमिक विद्यालय: माध्यमिक विद्यालय वह स्कूल होता है जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की पढ़ाई होती है। इसे हिंदी में माध्यमिक शिक्षा भी कहा जाता है और यह प्राथमिक शिक्षा के बाद आता है। इस स्तर पर छात्रें को विभिन्न विषयों में गहन शिक्षा दी जाती है और यह उच्च शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।
2) विद्यार्थी: विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया में होता है। विद्यार्थी आमतौर पर स्कूल, कॉलेज या किसी अन्य शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाई करता है और ज्ञान, कौशल, और समझ को बढ़ाने के लिए पढ़ाई करता है। विद्यार्थी का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत और पेशेवर विकास करना होता है।
3) पर्यावरण जागरुकता: पर्यावरण जागरुकता का मतलब है विद्यार्थियों को पर्यावरण की समस्याओं और उनके समाधान के प्रति संवेदनशील बनाना। इसमें यह समझाना शामिल है कि कैसे हमारे क्रियाकलापों, जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण, पर्यावरण को प्रभावित करते हैं और इससे बचने के उपाय क्या हो सकते हैं। इसमें विद्यार्थियों को सही तरीकों से कूड़ा प्रबंधन, ऊर्जा की बचत, जल संरक्षण, और स्थायी जीवनशैली अपनाने के बारे में शिक्षित करना शामिल है। जागरुकता फैलाने के प्रयासों से हम प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर पर्यावरण छोड़ सकते हैं।

6. अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।

7. अध्ययन की परिकल्पना

1. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

8. आंकड़ों का संकलन

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

9. न्यादर्श

वर्तमान शोध पत्र हेतु 500 छात्र एवं छात्राओं को शामिल किया गया है।

10.उपकरण

पारिवारिक वातावरण मापनी:- स्वनिर्मित प्रश्नावली।

11.परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या 1

माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	37.69	8.01	0.80	0.05 = 1.96
छात्राऐं	250	37.81	7.96		0.01 = 2.59

व्याख्या: तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र की पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान, मानक विचलन 37.69 एवं 8.01 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 37.81 एवं 7.96 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 0.80 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	250	37.84	7.94	0.60	0.05 = 1.96

ग्रामीण विद्यार्थी	250	37.80	7.99		0.01 = 2.59

व्याख्या: तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता को दर्शाया गया है। तालिका में माध्यमिक विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान, मानक विचलन 37.84 एवं 7.94 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 37.80 एवं 7.99 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रन्तिक अनुपात का मान 0.60 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

12.निष्कर्ष

1) माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2) माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, राकेश एवं झाझडिया, मनोज (2016). पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के ज्ञान तथा अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, International Journal of Education and Science Research Review, Volume-3, Issue-1.

कर्मवीर (2022). पर्यावरण जयगरूकता के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षुओं का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, IJCRT, Volume 10, Issue 7.

कुमार, धनन्जय एवं अजीम, शकीला (2022). जहानाबाद जिलेे में उच्च माध्यमिक स्तर के कला व वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, शोध पत्र, IJAER, Volume-11, Issue-4.

चन्डोला, पी. (1991) ''प्ररदूषण पृथ्वी का गृहण'' हिमालय पुस्तक भण्डार, नई दिल्ली।

चैधरी, रेनू (2007) ''पर्यावरण अध्ययन एवं शिक्षण'' ज्ञान भारती प्रकाशन न्यू कालोनी, जयपुर।

चन्द्रा, संस (2011) ''पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य'' आर्य पब्लिकेशन नई दिल्ली, 1985।